Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IX, Issue No. XVII, January-2015, ISSN 2230-7540

ब्रिटिश राज मे महिलाओ की स्थिति का अध्ययन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IX, Issue No. XVII, January-2015, ISSN 2230-7540

ब्रिटिश राज मे महिलाओ की स्थिति का अध्ययन

Rupa Kumari[1]* Dr. Viveka Nand Shukla[2]

[1] PhD Holder, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur

[2] Professor, Department of History, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur

सार – *किसी भी राष्ट्र या समाज में महिलाओं के प्रति अलग-प्रकार के दृष्टिकोण है। हिन्दू धर्म में स्त्री को सम्मान प्रदान करने की दृष्टि से उसे धन, शक्ति और बुद्धि के आदर्श के रूप में प्रदर्शित किया गया है जबकि भारतीय नारी के संदर्भ में मान्यता बिल्कुल विपरीत है। आज भले ही कानून लड़की के पिता के धन पर अधिकार स्वीकार करता है किन्तु इस कानून का क्रियान्वयन समाज में तब तक होना सम्भव नहीं है, जब तक कोई कुंजी कानून के द्वार पर दस्तक नहीं देती। हिन्दू धर्म में शक्ति का अवतार भले ही दुर्गा हो किन्तु भारतीय नारी को आज भी अबला ही माना जाता है। इसी प्रकार एक लम्बे समय तक स्त्री की बुद्धि और विवेक को समाज द्वारा सन्देह की दृष्टि से देखा जाता रहा है और आज भी देखा जा रहा है।*"

समाज हमेशा आपके पूर्ववर्ती समाज को देखते हुए ही अपनी परम्पराएँ बनाता एवं बिगाड़ता है। केवल भारतीय समाज ही नहीं बल्कि विश्व की किसी भी जाति, सम्प्रदाय वर्ग का समाज प्राकृतिक रूप से पुरुष सत्तात्मक समाज, कुछ अपवादों को छोड़कर, रहा है और वर्तमान में है भी। यदि ऐसा न होता तो पाश्चात्य देशों में अनेक स्त्री लेखिकाओं, समाज सेविकाओं को नारीवादी की संज्ञा न दी गयी होती और उन्हें पुरुषों द्वारा बनायी गयी अनेक परम्पराएँ न तोड़नी पड़ती। उदाहरणतयः सेकेण्ड सैक्सश् की विश्व प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखिका सीमाने-द-वोऊवार जिन्हें 20 *वीं सदी में नारी मुक्ति आंदोलन चलाने की क्या आवश्यकता थी*?

शव्द कुजीः राष्ट्र या समाज, भारतीय नारी, कानून, जाति, सम्प्रदाय वर्ग, मुक्ति आंदोलन

----------X----------

प्रस्तावना

प्रादेशिक ब्रिटिश काल(1857-1920) में भारतीय महिलाओं की स्थिति

स्वतंत्रता से पहले का समय ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना का समय था। यह 18वीं शताब्दी से प्रारंभ हुआ था। 200 वर्षों तक भारत अंग्रेजों के आधिपत्य में रहा। मुगलकाल में जो महिलाओं की स्थिति थी, वह अंग्रेंजी शासन काल में भी बनी रही। मुगलकाल के बाद भारत पर ब्रिटिश शासन स्थापित हो गया। इस समय भी बाल विवाह, बहुविवाह, दहेज प्रथा, विधवा विवाह निषेध एवं सती प्रथा इत्यादि कुरीतियाँ समाज में और भी अधिक पकड़ बनाए हुई थी। ब्रिटिश शासन को विरासत में सामंतवादी समाज मिला। इस व्यवस्था में महिला भोग की वस्तु समझी गई। धर्म की नीतियों ओर सिद्धांतों ने पहले से ही महिला के पैरों में बेड़ियाँ लगा रखी थी। ब्रिटिश काल में सामंतवादी व्यवस्था एक तरफ थी और दूसरी तरफ साम्राज्यवादी नीतियाँ। शासकों को महिला उत्थान से क्या लाभ होना था। देश के आर्थिक विकासकी डोर ब्रिटिश सत्ता के हाथ में थी।

ऐसे में महिला समाज तो पहले से ही पुरूष परनिर्भर था तो वह उन्नति कैसे कर सकता था। अंग्रेजो ने अपने लाभ के लिए अंग्रेजीशिक्षा पर जोर देना शुरू कर दिया।41 पश्चिम की संस्कृति की जड़े भारतीय समाजपर उगने लगी थी, चूंकि अंग्रेजांे को यहाँ की संस्कृति वैभव का दोहन करना था औरअपनी संस्कृति का मुलम्मा यहाँ चढ़ाना था जिसमें वह सफल भी हुए। मुगलकाल कीसतायी महिला घर की चारदीवारी में अपने जीवन की त्रासदी अभी भी भोग रही थी।वह सारे अधिकारों से वंचित होकर पुरूष प्रधान की भोग्या बन कर रह गई थी।

भारतीय इतिहास में अठारहवीं सदी का समय घोर अवनति और अद्योगति कासमय था। अंग्रेजी शासन व्यवस्था दिनो-दिन अपनी सत्ता बढ़ाती जा रही थी। भारतअपने प्राचीन वैभव को खो चुका था। 'वेदांत' की शिक्षाएँ लोगों की समझ से बाहर

www.ignited.in

होचुकी थी। यह युग पराधीनता का युग था ब्रिटिश शासन की अवधि में हमारे समाजकी सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक सभी संरचनाओं में अनेक परिवर्तन हुए ब्रिटिशशासन काल में महिलाओं का शोषित बना रहना ही उनके प्रशासन के हित में ही था।अतः महिलाओं की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। भारत में ब्रिटिश राज्य केप्रभाव से तथा शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा कर दिए जाने से भारतीय जीवन पद्धतिऔर राष्ट्रीय चरित्र में नए परिवर्तन प्रारंभ हुए। पश्चिम में औद्योगिक विकास औरभारतीय बाजारों में विदेशी माल की खपत के कारण गांवों में कुटीर उद्योग लगभगनष्ट हो गए। संयुक्त परिवार बिखरने लगे। ग्रामीणों के बीच गरीबी और अज्ञानता काराज्य हो गया। गाँव से शहरों की ओर भागने की प्रवृत्ति बढ़ गई। भारतीय समाजएक नये प्रकार के शोषण का शिकार हो गया। पहले से ही शोषित महिला पर इसकाऔर दुष्प्रभाव पड़ा। वह और पददलित और पीड़ित हो गई। ब्रिटिश शासन काल मेंमहिलाओं की निम्न निर्योग्यताओं के आधार पर हम इस काल में महिला की खराबस्थिति को सहज ही अनुमान लगा सकते हैं।

ब्रिटिश शासन काल में स्वतंत्र रूप से महिलाओं को मांगने और व्यवहारिकनियमों में किसी प्रकार का परिवर्तन करने के अधिकार नहीं थे। बाल विवाह, पर्दाप्रथा महिलाओं की शिक्षा में मुख्य बाधाएँ थी। बाल विवाह एवं पर्दा प्रथा का विरोधकरना उसके लिए कलंक समझा जाता था। इस युग में परम्परात्मक दृष्टि सेमहिलाओं का कार्य क्षेत्र घर था। वे माताएँ पहले थी, उपार्जिका बाद में। घर से बाहरका कार्य करना पारिवारिक सम्मान के विरूद्ध समझा जाता था। परम्परागत धार्मिकदायित्वों का निर्वाह करना ही उनके मनोरंजन का एक मात्र साधन था। पारिवारिकक्षेत्र में उनके समस्त अधिकार समाप्त हो गए थे। वह परिवार की संचालिका थीलेकिन व्यवहारिक रूप से सारे अधिकार पुरूषों के पास थे। उनके बिना महिलाकिसी भी प्रकार का कोई भी पारिवारिक या सामाजिक निर्णय नहीं ले सकती थी।

कम उम्र में ही विवाह हो जाने से परम्परागत रूढ़ियों एवं निषेधों से युक्त वैदिककाल की महिला जो अपने परिवार की 'साम्राज्ञी' होती थी ससुराल की सेविका बनकर रह गई। परिवार में बच्चे पैदा करना एवं पति के सभी संबंधियों की सेवा करनाही उसका मुख्य कर्तव्य हो गया। उत्तर वैदिक काल एवं मध्य कालीन युग कीबहुपत्नी-प्रथा, अंतर्जातीय विवाह, विवाह विच्छेद का अधिकार न होना आदि कुरीतियाँब्रिटिश काल तक समाज में मौजूद थी। विवाह के समय दहेज देने की प्रथा, धार्मिककार्यों को लेकर महिला का शोषण एक सामान्य सी बात थी। महिला भी इन सबकोपूर्व जन्म के कार्यों का फल मानकर इससे संतुष्ट रहती थी। इस कारण उसकीपारिवारिक व सामाजिक स्थिति में गिरावट आती चली गई।

ब्रिटिश काल में आर्थिक क्षेत्र में सबसे अधिक महिला निर्योग्यता देखने कोमिलती है। महिलाओं को न केवल संयुक्त परिवार की सम्पत्ति में से हिस्सा देने सेवंचित किया गया। अपितु अपने पिता की संपत्ति में से भी उसे कोई हिस्सा नहीं दियाजाता था। पिता की संपत्ति पर उसका कोई अधिकार नहीं था। इस युग में स्वयंमहिला खुद एक 'संपत्ति' मानी जाती थी। अतः उसे संपित्त के अधिकार कैसे दिए जासकते थे। पत्नी पति के परिवार का अंग हो गई और विधवाओं को मृत्यु तुल्य मानलिया गया। एक महिला मूख और प्यास से चाहे कितनी पीड़ित क्यों न हो, परन्तु

कोई भी आर्थिक क्रिया करना उनके स्त्रीत्व और कुलीनता के विरूद्ध मान लियागया। इसका परिणाम यह निकला कि बड़े अमानवीय व्यवहार के पश्चात् भी उसेपुरूष की दया पर आश्रित रहना पड़ता था। उसे घर से बाहर जाने या किसी बाहरके व्यक्ति से स्वतंत्र रूप से मिलने की अनुमति नहीं होती थी। समाज में पर्दा प्रथा,बाल विवाह जैसी कुरीति विद्यमान थी ऐसी सामाजिक स्थिति में महिला का आर्थिकरूप से आत्मनिर्भर होना तो असंभव था।

निष्कर्ष

ब्रिटिश शासन काल में महिला की सामाजिक स्थिति तो इतनी अधिक दयनीयथी कि उसका राजनीतिक क्षेत्र में हिस्सा लेना तो कल्पना से भी परे था। एक ऐसेसमय में जबकि महिला का घर के अंदर तो शोषण होता था, शोषण करने वालापुरूष स्वयं अंग्रेजों का गुलाम था तो स्वयं महिला राजनीति में कैसे हिस्सा ले सकतीथी। सन् 1919 तक तो महिलाओं को वोट देने तक का अधिकार नहीं था। ऐसे समयमें वह राजनीतिक कार्यों में भाग कैसे ले सकती थी। ब्रिटिश शासकों द्वारा भारतीयराजनीति पर अपना कब्जा कर रखा था। उन्होंने अपनी सुविधानुसार ही शासक एवंसत्ता के नियम बना रखे थे। जिसके कारण उन्हीं नियमों का पालन करना भारतीयजनता को अनिवार्य था। इन सब कारणों से पता चलता है कि ब्रिटिश काल मेंमहिला की स्थिति दयनीय थी। वह अब भी समाज में केवल पुरूष द्वारा बनाये गएनियमों का पालन करने वाली एक वस्तु थी। उसके जीवन का एक मात्र उद्देश्यपति सेवा एवं उसके परिवार के सदस्यों की सेवा करना था। उसका जीवन एकदमनरकीय बना हुआ था। महिला ने पुरूष द्वारा बनाए इस समाज के आगे अपने घुटनेटेक दिए थे।

संदर्भ सूची:

1. प्रभा आप्टे: भारतीय समाज में नारी, क्लासिंक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 1996, पृ.सं.-1

2. विश्व प्रकाश गुप्ता एवं मोहिनी गुप्त: स्वतंत्रता संग्राम एवं महिलाएँ, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1997, पृ.सं.-4

3. आशा रानी व्होरा: औरत कल आज और कल, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली, 2005, पृ.सं.-5-6

4. गुप्ता, विश्व प्रकाश एवं मोहिनी गुप्ता: स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएँ, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999, पृ.सं.-20

5. वीना गर्ग: भारतीय महिलाएँ एक विश्लेषण, आर्य पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2011, पृ.सं.-27-28

6. रोहित मिश्र: समाज कार्य एवं महिला सशक्तिकरण, न्यू रायल बुक डिपो कम्पनी, लखनऊ, 1999, पृ.सं.-41-42

7. आशा रानी व्होरा: औरत कल आज और कल, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली, 2005, पृ.सं.-49

8. रामप्रसाद व्यास और मनोरमा उपाध्याय, भारतीय नारी: परिवर्तन एवं चुनौतियाँ, राजस्थानी ग्रंथागार, जयपुर, 2009, पृ.सं.-44

9. रोहित मिश्र: समाज कार्य एवं महिला सशक्तिकरण, न्यू रायल बुक डिपो कम्पनी, लखनऊ, 1999, पृ.सं.-45

10. कमलेश कटारिया: नारी जीवन: वैदिक काल से आज तक, यूनिक टेªडर्स प्रकाशन, जयपुर, 2009, पृ.सं.-30

11. गुप्ता, विश्व प्रकाश एवं मोहिनी गुप्ता: स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएँ, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999, पृ.सं.-9-10

12. प्रीति मिश्रा: हिन्दू महिलाओं के जीवन में धर्म का महत्व, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2005, पृ.सं.-49

13. गुप्ता, विश्व प्रकाश एवं मोहिनी गुप्ता: स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएँ, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999, पृ.सं.-10

14. आशा रानी व्होरा: औरत कल आज और कल, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली, 2005, पृ.सं.-16

15. रोहित मिश्र: समाज कार्य एवं महिला सशक्तिकरण, न्यू रायल बुक डिपो कम्पनी, लखनऊ, 1999, पृ.सं.-47

16. बी.एन. सिंह: आधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण, रावत पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2010, पृ.सं.-18

Corresponding Author

Rupa Kumari*

PhD Holder, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur

www.ignited.in